प्रधानमंत्री द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) गुवाहाटी के छात्रों एवं संकाय सदस्यों को संबोधन

26 अगस्त, 2008

मैं समझता हूं यह विंस्टन चर्चिल ही थे जिन्होंने एक बार कहा था कि भविष्य के साम्राज्य बुद्धि पर आधारित बौद्धिक साम्राज्य होंगे। और जब कभी भी मैं आई आई टी जैसे उच्च स्तर के संस्थानों में जाता हूं तो मुझे लगता है कि हमारा देश उसी बौद्धिक साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के लिए या उसका हिस्सा बनने के पथ पर अग्रसर हो रहा है। आई आई टी हमारे देश में संकाय सदस्यों और छात्रों दोनों के ही एक विशेष समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। आई आई टी संस्थानों ने अति विशिष्ट योगदान देकर हमारे देश की सेवा की है। किंतु मुझे पूरा विश्वास है कि अभी इनका और उत्कर्ष होगा। हमने प्रो. गौतम बरूआ द्वारा अपने आरक्षण के मुद्दे पर दी गई टिप्पणी को नोट कर लिया है और मैं इसे अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों के समक्ष प्रस्तुत करूंगा। कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुझे गुवाहाटी के इस आई आई टी परिसर में आकर अपार प्रसन्नता हो रही है। मैं संसद में असम का प्रतिनिधित्व करता हूं और जब कभी हम विविध क्षेत्रों में प्रगति करते हैं तो इससे मुझे हर्ष का अनुभव होता है। यह देखना वाकई सुखद है कि बहुत ही कम अवधि में, इस आई आई टी ने अपने लिए 2000 से अधिक छात्रों और संकाय सदस्यों वाले परिसर वाले एक भवन का निर्माण कर लिया है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि मुझे आपके भविष्यलक्षी प्रेक्षाग्रह का उद्‌घाटन करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हमारे देश में न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में शैक्षिक उत्कृष्टता की सर्वोच्च परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये हमारे देश में सॉफ्टवेयर क्रांति की प्रयोगशालाएं हैं और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू के पथ-प्रदर्शक स्वप्न को पूरा करने के लिए अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। जवाहर लाल नेहरू ने ऐसे समय में उच्चतर उत्कृष्टता वाली संस्थाओं के निर्माण के महत्व को समझा जब हमें निरक्षरता और अल्प विकसित प्राथमिक शिक्षा पद्धति से जकड़े हुए हैं। आज यदि दुनिया भारत को ज्ञानशक्ति के रूप में मानती है तो यह जवाहरलाल नेहरू की ही संकल्पना है जिसके लिए राष्ट्र उनका आभारी है।

उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में किए गए पूर्व निवेश का फल आज मिल रहा है जब हम वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था की मूल्य शृंखला में उत्तरोत्तर विकास कर रहे हैं। हमारे कार्य और चुनौतियां हमें भयभीत करती हैं, किंतु वे हमें अवसर भी प्रदान करती हैं।

आज हम एक ऐसे विश्व में रहते हैं जहां मानवीय ज्ञान में, विशेष रूप से वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय ज्ञान में गुणात्मक गति से बढ़ोतरी हो रही है और हर जगह यह मान्यता प्रचलित है कि किसी देश को जिस गति की आवश्यकता होती है वह विज्ञान की गति से अधिक होनी चाहिए और प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय संपदा का प्रमुख निर्धारक तत्व बनती जा रही है। अतएव आपकी रचनात्मकता और मानवीय ज्ञान के बढ़ते भंडार में आपका योगदान, राष्ट्रों के सौजन्य में हमारे वास्तविक स्थान का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है।

हम विश्व के नवोदित राष्ट्रों में से एक हैं और जानकारों के मुताबिक भारत में वर्ष 2020 तक 50 करोड़ से अधिक प्रशिक्षित लोग तैयार करने की क्षमता है। यह संख्या विश्व के कुल कार्यबल के एक चौथाई से भी अधिक होगी, जैसा कि मुझे बताया गया है। भारत के लिए यह महान और अनूठा अवसर इस शैक्षिक क्रांति से ही प्राप्त होगा जो हमारे लिए हमारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य होगा।

हमारी सरकार का यह प्रयास रहा है कि अगला बड़ा निवेश उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में किया जाए और इस समय चल रही 11वीं पंचवर्षीय योजना मूलतः एक ज्ञान-निवेश योजना है। हमने अभूतपूर्व शिक्षा के क्षेत्र में 2,75,000 करोड़ रुपए का आबंटन करके पांच गुना वृद्धि आबंटन में की है।

हम सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से सबको गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं। हम माध्यमिक शिक्षा के व्यापक विस्तार का प्रारंभ कर रहे हैं। उच्चतर शिक्षा के अंतर्गत, हम आठ नए आई आई टी, सात नए आई आई एम, सोलह नए केंद्रीय विश्वविद्यालय, चौदह विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय और पांच नए भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों का निर्माण कर रहे हैं जिनमें से कुछ पहले से ही कार्य कर रहे हैं।

इनमें से कुछ लगभग छह आई आई टी ने पहले ही कार्य करना शुरू कर दिया है और मुझे बहुत खुशी है कि आई आई टी गुवाहाटी, पटना में स्थापित किए जाने वाले नए संस्थान की मॉनीटरिंग कर रहा है। तीन भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों और शिलांग स्थित एक आई आई एम ने भी कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। तेजी से किए जाने वाले विस्तार के इस चरण में हमने उच्चतर शिक्षा संबंधी सुविधाओं के असमान भौगोलिक विस्तार को दूर करने का प्रयास किया है। पूर्वोत्तर और विशेष रूप से असम को इन संस्थानों में उचित भागीदारी प्राप्त हुई है।

कौशल विकास के लिए हम एक व्यापक राष्ट्रीय पहल भी कर रहे हैं। इससे हमारे युवाओं को अपनी व्यक्तिगत क्षमता प्राप्त करने और वैश्विक रूप से एक प्रतिस्पर्धात्मक भारत का निर्माण करने के लिए व्यावसायिक और प्रोफेशनल शिक्षा के अवसर प्राप्त होंगे। दस नए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बीस भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान और एक हजार नए पॉलिटेकनिक, ये सभी इसी पंचवर्षीय योजना में स्थापित किए जा रहे हैं।

हमारी सरकार अपनी ओर से भरपूर प्रयास कर रही है। देश में शैक्षिक विकास के लिए अपनी समस्त महत्वाकांक्षी योजनाओं और लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति हम पूरी तरह कटिबद्ध हैं। लेकिन समस्या की व्यापकता को कम कर लेना और अपने सामने उपलब्ध अवसरों को प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं होगा। हमें निगमित क्षेत्र, गैर-सरकारी संस्थाओं और सामुदायिक संगठनों के साथ मिलकर साझा रूप में कार्य करना होगा। उच्चतर शिक्षा सहित शिक्षा के पूरे क्षेत्र में हमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच रचनात्मक भागीदारी सुलभ करानी होगी।

पूरे विश्व में अनेक विख्यात शैक्षिक संस्थाएं अब अपने-अपने परिसरों में सहयोगी ज्ञान-भागीदारी की स्थापना हेतु सूचना प्रौद्योगिकी उद्योगों के साथ भागीदारी कर रही हैं। इनसे सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग और शिक्षा क्षेत्र दोनों को ही परस्पर लाभ प्राप्त होगा। ज्ञान उद्योग को अधिकाधिक अभिनव परिवर्तनों के माध्यम से संचालित किया जाता है और इन अभिनव परिवर्तनों का उद्‌भव उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में ही संभव होता है।

इस बैठक से पहले, मुझे इस परिसर के टी सी एस शिक्षण केंद्र में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं टी सी एस, श्री दामोदर अय्यर, असम सरकार और आई आई टी, गुवाहाटी को बधाई देता हूं कि इन्होंने अपने परिसर में स्थित इस अनूठे प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना परस्पर सहयोग से की है। मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हो रही है कि यह पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रथम सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग नीत आई आई टी प्रशिक्षण केंद्र है और एक आई आई टी और टी सी एस के बीच प्रथम सहयोगी प्रयास है, जो हमारी अग्रिम श्रेणी की ज्ञान-आधारित कंपनियों में से एक है।

पूर्वोत्तर के युवाओं के अंग्रेजी भाषा-कौशल से हम सभी परिचित हैं। हमारे देश के विभिन्न भागों में सेवा उद्योग में उनकी अच्छी उपस्थिति है। अब हमारा प्रयास, इस क्षेत्र के युवाओं की बढ़ती संख्या को प्रशिक्षित और शिक्षित करने का होना चाहिए ताकि वे अपने भीतर उच्चतर स्तर के कौशलों का विकास कर सकें।

मुझे विश्वास है कि जिन पेशेवरों को यहां प्रशिक्षित किया जाता है वे न केवल असम में बल्कि संपूर्ण पूर्वोत्तर में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के विकास में योगदान देंगे।

आजकल तेजी से लोकतंत्र बनने और वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहे विश्व में सहयोग और सह-निर्माण उच्चतर शिक्षा की पहचान (हॉलमार्क) बनते जा रहे हैं। हम एक एकीकृत राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क की स्थापना कर रहे हैं जो उच्चतर शिक्षा और ज्ञान की सभी प्रमुख संस्थाओं से जुड़ेगा। यह नेटवर्क हमारी उच्चतर शिक्षण की संस्थाओं को एक दूसरे से जुड़ने और सापेक्ष अंतर विषयी संवाद जारी रखने में मदद करेगा।

इससे आई आई टी, आई आई एम, राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों जैसी संस्थाओं में शैक्षिक संसाधनों के प्रवाह का लाभ एक दूसरे को प्राप्त हो सकेगा और इससे प्रत्येक भागीदार संस्था ज्ञान संपन्न हो सकेगी। इस नेटवर्क का प्रथम चरण इस वर्ष के पूरा होने के पहले ही कार्य करने लगेगा और गुवाहाटी का यह आई आई टी इसका अंग होगा।

प्रिय छात्रों, हमें यह प्राचीन कहावत याद रखनी चाहिए कि शिक्षा दासता से मुक्ति दिलाती है। यह एक वृहत्तर उद्देश्य है और यही शिक्षा की वृहत्तर सार्थकता है। आई आई टी का परिवेश आपको व्यक्तिगत और प्रोफेशनल संवृद्धि और समृद्धि के लिए असाधारण अवसर प्रदान करता है। इस समय का उपयोग आप न केवल इंजीनियरी और सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में अपने आपको शिक्षित करने के लिए करें, बल्कि एक ऐसी ज्ञान-पिपासा का विकास करने के लिए भी करें जो एक समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सके।

हमारे राष्ट्र ने इन उत्कृष्टता केंद्रों में भारी निवेश किया है ताकि इसकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को, अपनी कल्पनाओं को उद्वेलित करने का और अपने लिए व अपने परिवार के लिए अपने देश के लिए ऊंची सोच रखने और ऊंचे स्वप्न देखने का अवसर प्रदान किया जा सके। देश आपसे यह उम्मीद करता है कि एक राष्ट्र के रूप में हमारे समक्ष उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए आप अपनी रचनात्मकता, अपने साहस और उद्यमिता की भावना, अपने नेतृत्व एवं अभिनव विकास की भावना का उपयोग और विकास करें।

मैंने हरित ऊर्जा, कम लागत वाले लोक प्रचलित परिवहन, साधनों, नवीन संचार उपकरणों और ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में हमारे आई आई टी संस्थानों में अमल में लाए जा रहे नवीन विचारों के बारे में पढ़ा, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की विविधता ने और इस मानवीय अनुभव ने हमारे युवा आई आई टी छात्रों

को समस्या का सामना करना पड़ता है, रचनात्मकता की इस महान लहर को उद्वेलित किया है और यह हमारे राष्ट्र की महान राष्ट्रीय परिसंपत्ति है।

मुझे भारत के पुनर्निर्माण में भारत की युवा शक्ति पर पूरा विश्वास है। वर्तमान सदी में, जिसके बारे में यह सिद्ध किया जा रहा है कि वह विश्व में एशिया की सदी होगी, हमारा समय, बल्कि आपका समय यहीं से और अभी से शुरू होता है। मुझे पूरा यकीन है कि आप इस आकांक्षा को पूरा करेंगे। मेरी कामना है कि आप अपने प्रयासों में सफल हों।

*****